Author: Dr. Govind Malviya (REAL HI STORY)

Publication Date: 12th August 2026

Language: Hindi & English (Bilingual Edition)

मुगलों का सबसे 'प्यारा' राजपूत दुश्मन: जब औरंगजेब की पोती ने उसके सबसे बड़े शत्रु को 'बाबो' (पिता) कहा!

विषय: मारवाड़-मुगल 30-वर्षीय युद्ध (1678–1707) और वीर दुर्गादास राठौड़ का नैतिक व कूटनीतिक चरित्र

लेखक: डॉ. गोविंद मालवीय (REAL HI STORY)

भारतीय इतिहास का वह सबसे बड़ा मनोवैज्ञानिक युद्ध (Psychological Warfare) कौन सा है, जिसने किसी साम्राज्य के अहंकार को पूरी तरह तोड़ दिया?

मुख्यधारा के इतिहास ने हमें हमेशा युद्धों को केवल "तलवारों की खनक और खून-खराबे" के रूप में दिखाया है। लेकिन राजपूताना और मुगलों के बीच 30-वर्षीय युद्ध (1678–1707) के दौरान एक ऐसी घटना घटी, जिसने यह साबित कर दिया कि असली जीत मैदान-ए-जंग में नहीं, बल्कि नैतिकता, चरित्र और कूटनीति के मैदान में जीती जाती है।

यह कहानी है **वीर दुर्गादास राठौड़** और मुगल सम्राट **औरंगजेब** की—एक ऐसा संघर्ष, जहाँ औरंगजेब जैसे शक्की और क्रूर बादशाह को अपने सबसे कट्टर दुश्मन की निष्ठा और नैतिक चरित्र के सामने घुटने टेकने पड़े।

© 12th Aug. 2026 Govind Malviya (REAL HI STORY)

1. 1681 की वह खौफनाक रात और औरंगजेब की 'डर्टी ट्रिक'

बात 1 जनवरी 1681 की है। औरंगजेब का अपना बेटा, **शहजादा मोहम्मद अकबर**, मुगलों की कट्टर नीतियों से तंग आकर वीर दुर्गादास राठौड़ और मेवाड़-मारवाड़ की संयुक्त सेना के साथ मिल गया। नडोल (पाली) में अकबर ने खुद को 'हिंदुस्तान का शहंशाह' घोषित कर दिया।

औरंगजेब के लिए यह सबसे बड़ा संकट था। उसकी अपनी ही सेना का एक बड़ा हिस्सा उसके बागी बेटे के साथ था। जब औरंगजेब ने देखा कि वह सैन्य ताकत से नहीं जीत सकता, तो उसने छल-कपट का सहारा लिया:

- **तहव्वुर खान की हत्या:** औरंगजेब ने अकबर के मुख्य सेनापति और अजमेर के फौजदार तहव्वुर खान (पदशाह कुली खान) के ससुर के ज़रिए धमकी भरा खत भिजवाया कि "यदि तुरंत वापस नहीं आए, तो तुम्हारे पूरे परिवार को ज़लील कर मार दिया जाएगा।" खौफ के मारे तहव्वुर खान रात के अंधेरे में औरंगजेब के शाही तंबू (गुलाल-बार) पहुँचा, जहाँ हथियार उतारने के विवाद में पहरेदारों ने उसे मार डाला।
- **नकली खत का षड्यंत्र:** औरंगजेब ने दुर्गादास के कैंप में एक जाली खत (Forged Letter) फिंकवाया। खत में अकबर की तारीफ करते हुए लिखा गया था– *"शाबाश अकबर! तुमने राजपूतों को सही जाल में फंसाया है। कल सुबह हम दोनों मिलकर इन्हें बीच में पीस देंगे।"*

© 12th Aug. 2026 Govind Malviya (REAL HI STORY)

दुर्गादास सच्चाई जानने अकबर के तंबू की ओर बढ़े, लेकिन अकबर गहरी नींद में सो रहा था और उसके पहरेदारों ने दुर्गादास को मिलने नहीं दिया। सेनापति गायब था और शहजादे से मुलाकात नहीं हो सकी–राजपूत सरदारों को लगा कि धोखा हुआ है। वे रातों-रात अपनी सेना लेकर पीछे हट गए। सुबह जब अकबर सोकर उठा, तो वह पूरी तरह अकेला था।

2. अकबर का 'अल्टीमेट ट्रस्ट' (The Ultimate Trust)

जब दुर्गादास को औरंगजेब की चाल का पता चला, तो उन्होंने तुरंत लौटकर अकबर की जान बचाई। अकबर को समझ आ गया था कि उत्तर भारत में अब उसका बचना नामुमकिन है। वह दक्षिण भारत में छत्रपति संभाजी महाराज की शरण में जाने के लिए मजबूर था।

भागने से पहले, अकबर के सामने सबसे बड़ा सवाल अपने दो मासूम बच्चों की सुरक्षा का था:

1. **सफियत-उन-निसा** (बेटी)
2. **बुलंद अख्तर** (बेटा)

औरंगजेब जैसा शासक अपने बागी बेटे के बच्चों को जिंदा नहीं छोड़ता। ऐसे समय में अकबर ने अपने बच्चों को किसी मुगल सूबेदार के हवाले करने के बजाय **वीर दुर्गादास राठौड़** के हाथों में

सौंप दिया। अकबर जानता था कि भले ही दुर्गादास उसके पिता का सबसे बड़ा दुश्मन है, लेकिन पूरी दुनिया में उसकी औलाद की जान और आबरू केवल यही राजपूत योद्धा बचा सकता है।

3. "राजपूत औरतों और बच्चों पर वार नहीं करते!"

मुगलों ने मारवाड़ पर कब्ज़ा करने के लिए जो अत्याचार किए थे, उससे राठौड़ सरदारों का खून खौल रहा था। जब औरंगजेब की पोती उनके हाथ लगी, तो कुछ सरदारों ने दुर्गादास के सामने प्रस्ताव रखा:

"यह मुगलों से बदला लेने का सबसे सही मौका है! सफियत-उन-निसा का विवाह हमारे राजा अजीत सिंह से करवा दिया जाए या इसे बंदी बनाकर रखा जाए।"

वीर दुर्गादास राठौड़ ने अपनी तलवार म्यान से निकाली और गरज कर कहा:

"राजपूत युद्ध क्षेत्र में दुश्मन का सीना छलनी करना जानते हैं, लेकिन किसी बेबस बच्ची, महिला या बंदी पर वार करना हमारी मर्यादा और धर्म के खिलाफ है। इन बच्चों की रक्षा हमारी आन है।"

© 12th Aug. 2026 Govind Malviya (REAL HI STORY)

4. बाड़मेर के बीहड़ों में 'शाही और इस्लामी तालीम'

दुर्गादास राठौड़ ने उन दोनों बच्चों को बाड़मेर और जालोर के घने जंगलों व रेगिस्तानी गांवों (जैसे जूना और खेड़वा) में सुरक्षित छिपा दिया।

दुर्गादास ने केवल उन्हें छिपाया ही नहीं, बल्कि यह सुनिश्चित किया कि उनकी परवरिश में कोई कमी न आए:

- उन्होंने अजमेर से एक विद्वान मौलवी (**काजी शम्सुद्दीन**) को गुप्त रूप से बुलवाया।
- बीहड़ों में रहते हुए भी उन बच्चों के लिए पांचों वक्त की नमाज़, अरबी भाषा की शिक्षा और **कुरान** पढ़ने का पूरा इंतज़ाम किया गया।
- उन्हें वही शाही सम्मान दिया गया जो दिल्ली के लाल किले में मुगल शहजादों को मिलता था।

5. 15 साल बाद: औरंगजेब के दरबार का वह सन्न कर देने वाला पल

15 साल बीत गए। 1696 में, मुगल अधिकारी और प्रसिद्ध इतिहासकार **ईश्वरदास नागर** की मध्यस्थता से दुर्गादास राठौड़ ने औरंगजेब के पास संदेश भेजा कि वे उसकी पोती सफियत-उन-निसा को लौटाने के लिए तैयार हैं।

औरंगजेब अंदर से बहुत डरा हुआ था। उसे यकीन था कि इतने सालों तक राजपूतों के बीच रहने के कारण उसकी पोती का धर्म भ्रष्ट हो गया होगा। उसने पोती के आते ही उसे वापस इस्लामी तालीम देने के लिए एक उस्ताद (ट्यूटर) नियुक्त करने का हुक्म दिया।

तभी दरबार में वह हुआ जिसने औरंगजेब समेत पूरे मुगल दरबार को स्तब्ध कर दिया। शहजादी सफियत-उन-निसा ने शुद्ध और स्पष्ट अरबी लहज़े में कुरान की आयतें पढ़ना शुरू कर दिया। उसने कहा:

"मुझे किसी उस्ताद की जरूरत नहीं है। दुर्गादास जी ने मेरे लिए मौलवी का प्रबंध किया था और मेरी धार्मिक शिक्षा व पवित्रता में कोई कमी नहीं आने दी।"

अचंभित औरंगजेब ने अपनी पोती से पूछा:

"आखिर यह दुर्गादास दिखता कैसा है? उसका वेश और चेहरा कैसा है?"

तब शहजादी सफियत-उन-निसा ने जो जवाब दिया, वह राजस्थानी साहित्य में इस अमर दोहे के रूप में दर्ज हो गया:

बाबो कहत पुकारती, जाणू नी उणरो वेश।

कारण कि निज नैण सूं, देख्यो नी दुर्गेश।।

© 12th Aug. 2026 Govind Malviya (REAL HI STORY)

(अर्थ: "हे जहांपनाह! मैं 15 सालों तक उन्हें हमेशा 'बाबो' (पिता/बाबा) कहकर पुकारती रही, लेकिन उन्होंने मर्यादा और पूर्ण पर्दा रखते हुए कभी मेरे सामने अपनी नजरें ऊपर उठाकर नहीं देखीं। कारण यही है कि मैंने अपनी आंखों से कभी दुर्गेश (दुर्गादास) के चेहरे या वेश को देखा ही नहीं।")

यह सुनकर औरंगजेब का सिर शर्म और सम्मान से झुक गया।

6. मुग़ल बादशाह का सरेंडर और दुर्गादास की निष्काम मांग

1698 में, जब दुर्गादास ने शहजादे बुलंद अख्तर को भी सुरक्षित लौटा दिया और स्वयं औरंगजेब के दरबार में उपस्थित हुए, तो औरंगजेब ने खड़े होकर उनका सत्कार किया। औरंगजेब ने कहा:

"मांगो दुर्गादास! तुम्हें जो जागीर, खजाना या मनसब चाहिए, मांग लो।"

दुर्गादास राठौड़ ने अपने लिए एक रुपया भी नहीं मांगा। उन्होंने केवल एक शर्त रखी:

"मेरे स्वामी, महाराजा जसंवत सिंह के पुत्र अजीत सिंह को उनका अधिकार और मारवाड़ (जोधपुर) का राज्य वापस सौंप दिया जाए।"

औरंगजेब को झुकना पड़ा। उसने अजीत सिंह को जालोर, सांचौर और मेड़ता का परगना वापस दिया और दुर्गादास को 3000 का मनसब प्रदान किया।

वीर दुर्गादास और मारवाड़ की इस पावन आन-बान-शान के लिए राजस्थानी साहित्य का यह अमर दोहा गूंजता है:

खग व्हालो, जग व्हालो, व्हालो मरुधर देश।

श्याम धर्म व्हालो सदा, नित व्हालो नरेश।।

(अर्थ: जिन्हें अपनी तलवार प्रिय है, संसार में जिनका नाम प्रिय है, जिन्हें अपना मरुधर देश प्रिय है; जो अपने धर्म पर सदा अडिग रहते हैं और जिन्हें अपने नरेश (राजा) सर्वोपरि प्रिय हैं—ऐसे वीरों की भूमि मारवाड़ है।)

© 12th Aug. 2026 Govind Malviya (REAL HI STORY)

The Mughal Empire's Most Respected Enemy: When Aurangzeb's Granddaughter Called His Fiercest Rival 'Babo' (Father)

Mainstream history often reduces conflicts to mere clashes of steel and bloodshed. However, during the 30-year Rathore-Mughal War (1678–1707), an extraordinary event unfolded that proved true victory is not always won on the battlefield, but through righteousness, character, and diplomatic brilliance.

This is the historic account of **Veer Durgadas Rathore** and the Mughal Emperor **Aurangzeb**—a confrontation where a suspicious and ruthless emperor was forced to bow before the moral integrity of his greatest enemy.

© 12th Aug. 2026 Govind Malviya (REAL HI STORY)

1. The Treacherous Night of 1681 and Aurangzeb's Deception

On January 1, 1681, Prince Muhammad Akbar—Aurangzeb's own son—rebelled against his father's orthodox policies and joined forces with Veer Durgadas Rathore and the Rajput confederacy. At Nadol (Pali), Prince Akbar declared himself the Emperor of Hindustan.

Realizing that he could not defeat this joint Rajput-Mughal coalition purely through military force, Aurangzeb resorted to psychological sabotage:

- **Assassination of Tahawwur Khan:** Aurangzeb sent a threatening message to Akbar's commander-in-chief, Tahawwur Khan (Padshah Quli Khan), warning him that his family in Ajmer would be publicly disgraced if he did not defect immediately. Terrified, Tahawwur Khan entered Aurangzeb's royal tent late at night, where he was killed during an altercation over disarming.
- **The Forged Letter:** Aurangzeb engineered a fake letter addressed to Prince Akbar and deliberately had it dropped near Durgadas's camp. The letter praised Akbar, stating: *"Well done, Akbar! You have successfully lured the Rajputs into our trap. Tomorrow morning, we shall crush them together."*

When Durgadas went to verify the letter at Akbar's quarters, the guards prevented him from entering because the Prince was sleeping. With the commander-in-chief dead and the prince inaccessible, the Rajput sardars suspected treachery and retreated in the night. By morning, Prince Akbar woke up to find himself entirely deserted.

2. Prince Akbar's Ultimate Act of Trust

Upon uncovering Aurangzeb's deception, Durgadas immediately returned and saved Prince Akbar from the advancing imperial army. Understanding that his survival in Northern India was impossible, Akbar prepared to flee south to seek refuge with Chhatrapati Sambhaji Maharaj.

However, Akbar faced a grave dilemma regarding his two young children:

1. **Safiyat-un-Nisa** (Daughter)
2. **Buland Akhtar** (Son)

Leaving them behind meant certain execution or dishonor at Aurangzeb's hands. In a remarkable act of trust, Prince Akbar surrendered his children into the custody of **Veer Durgadas Rathore**. Akbar knew that although Durgadas was his father's deadliest foe, he was the only man in the Indian subcontinent whose integrity guaranteed his children's safety and honor.

3. "Rajputs Do Not War Against Women and Children"

Decades of Mughal oppression in Marwar had left the Rathore nobility deeply embittered. When Aurangzeb's granddaughter came into their hands, several commanders urged Durgadas:

"This is our chance for retribution! Marry Safiyat-un-Nisa to our young King Ajit Singh or hold her as a royal captive."

Veer Durgadas Rathore drew his sword and firmly declared:

"A Rajput slays his enemy in open war. To harm or dishonor a helpless child, a woman, or a captive violates our sacred code. Protecting these children is a matter of our honor."

4. Islamic Upbringing in the Deserts of Barmer

Durgadas hid the royal children deep within the ravines and desert hideouts of Barmer and Jalor (such as Juna and Khedwa).

He went to extraordinary lengths to ensure their royal dignity and religious faith remained intact:

- He secretly brought an Islamic scholar, **Qazi Shamsuddin**, from Ajmer.
- Even while living in exile, the children were provided facilities for five daily prayers (*Namaz*), Arabic lessons, and complete recitation of the **Quran**.
- They were accorded the exact royal deference due to Mughal princes and princesses.

© 12th Aug. 2026 Govind Malviya (REAL HI STORY)

5. 15 Years Later: The Stunned Mughal Court

In 1696, through the mediation of the Mughal historian and official **Ishwardas Nagar**, Durgadas arranged to return Princess Safiyat-un-Nisa to Aurangzeb.

Aurangzeb was convinced that after fifteen years among Rajputs, his granddaughter's faith and character had been corrupted. He immediately ordered a tutor to instruct her in Islamic scripture.

The entire court was shocked when the young princess began reciting verses from the Holy Quran in flawless, elegant Arabic. She addressed her grandfather:

"I require no tutor, Your Majesty. Durgadas Ji appointed a qualified scholar for me and ensured my religious education and dignity were meticulously preserved."

An astonished Emperor asked his granddaughter:

"What does this Durgadas look like? What is his appearance?"

Princess Safiyat-un-Nisa's response remains immortalized in Rajasthani literature through this traditional couplet:

बाबो कहत पुकारती, जाणू नी उणरो वेश।

कारण कि निज नैण सूं, देख्यो नी दुर्गेश।।

(Translation: "For fifteen long years, I called him 'Babo' (Father), yet out of strict modesty and respect, he never raised his gaze toward me. The reason I do not know his appearance is that I never cast my own eyes directly upon Durgesh (Durgadas).")

© 12th Aug. 2026 Govind Malviya (REAL HI STORY)

The mighty Emperor sat in silent awe, humbled by the moral stature of his rival.

6. The Emperor's Surrender and Durgadas's Selfless Demand

In 1698, after Durgadas returned Prince Buland Akhtar and personally entered the imperial court, Aurangzeb stood up to receive him. The Emperor offered:

"Ask for anything, Durgadas! Whatever titles, treasure, or jagirs you desire shall be yours."

Durgadas asked for nothing for himself. He presented a single condition:

"Restore the Kingdom of Marwar (Jodhpur) to its rightful heir, Maharaja Ajit Singh, son of my late master Jaswant Singh."

Aurangzeb conceded. He restored the territories of Jalor, Sanchore, and Merta to Ajit Singh and granted Durgadas a mansab of 3,000.

This spirit of courage, righteousness, and loyalty is celebrated in the traditional Rajasthani verse:

खग व्हालो, जग व्हालो, व्हालो मरुधर देश।

श्याम धर्म व्हालो सदा, नित व्हालो नरेश।।

(Translation: "Beloved is the sword, beloved is honor across the world, and beloved is the land of Marwar; those who hold their righteous faith dear and remain eternally loyal to their King—such are the brave of Marwar.")

© 12th Aug. 2026 Govind Malviya (REAL HI STORY)

प्राथमिक ऐतिहासिक स्रोत एवं संदर्भ (Primary Historical Sources)

क्रम	ग्रंथ / पुस्तक का नाम	लेखक / इतिहासकार	ऐतिहासिक विवरण
1	**फुतूहात-ए-आलमगीरी**	ईश्वरदास नागर	समकालीन मुगल इतिहासकार जिन्होंने दुर्गादास और औरंगजेब के बीच बच्चों की वापसी की वार्ता में मध्यस्थ की भूमिका निभाई।
2	**मुंतखब-उल-लुबाब**	खाफी खान (Khafi Khan)	मुगल इतिहासकार जिन्होंने औरंगजेब द्वारा दुर्गादास के नैतिक चरित्र की प्रशंसा किए जाने का उल्लेख किया।
3	**History of Aurangzib (Vol. V)**	सर जादुनाथ सरकार	आधुनिक इतिहासकार जिन्होंने राठौड़-मुगल युद्ध और दुर्गादास के कूटनीतिक मास्टरस्ट्रोक का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया।

© 12th Aug. 2026 Govind Malviya (REAL HI STORY)